

स्पर्श

[गद्य खंड]

पाठ 1 : प्रेमचंद

1. बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ निम्न थी-

- बड़े भाई साहब परिश्रमी विद्यार्थी थे। एक ही कक्षा में तीन बार फेल हो जाने के बाद भी पढ़ाई से उन्होंने अपना नाता नहीं तोड़ा।
- वे गंभीर तथा संयमी किस्म का व्यक्तित्व रखते थे अर्थात् हर समय अपने छोटे भाई के सामने आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए खेल-कूद से दूर और अध्ययनशील बने रहते थे।
- बड़े भाई साहब कुशल वक्ता थे वे छोटे भाई को अनेकों उदाहारणों द्वारा जीवन जीने की समझ दिया करते थे।
- बड़ों के लिए उनके मन में बड़ा सम्मान था पैसों की फिजूलखर्ची को उचित नहीं समझते थे। छोटे भाई को अक्सर वे माता-पिता के पैसों को पढ़ाई के अलावा खेल-कूद में गँवाने पर डाँट लगाते थे।

2. बड़े भाई होने के नाते वे अपने छोटे भाई के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहते थे। उन्हें अपने नैतिक कर्तव्य का ज्ञान था। वे अपने किसी भी कार्यों द्वारा अपने छोटे भाई के सामने गलत उदाहरण रखना नहीं चाहते थे जिससे कि उनके छोटे भाई पर बुरा असर पड़े। इसलिए बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छा दबानी पड़ती थी।

3. मेरे अनुसार बड़े भाई की डॉट फटकार का ही अप्रत्यक्ष परिणाम था कि छोटा भाई कक्षा में अक्ल आया। क्योंकि छोटे भाई को वैसे ही पढ़ने लिखने की अपेक्षा खेल-कूद कुछ ज्यादा ही पसंद था। ये तो बड़े भाई के उस पर अंकुश रखने के कारण वह घंटा दो घंटा पढ़ाई कर लेता था जिसके कारण वह परीक्षा में अक्ल आ जाता था।
4. मैं लेखक के शिक्षा पर किए व्यंग पर पूरी तरह सहमत हूँ। पाठ में बच्चों की व्यावहारिक शिक्षा को पूरी तरह नजर अंदाज किया है। पाठ में बच्चों के ज्ञान कौशल को बढ़ाने की बजाए उसे रट्टू तोता बनाने पर जोर दिया गया है जोकि सर्वाधिक अनुचित है। परीक्षा प्रणाली में आंकड़ों को महत्व दिया गया है। बच्चों के सर्वांगीण विकास की ओर शिक्षा प्रणाली कोई ध्यान नहीं देती है।
5. बड़े भाई साहब जिंदगी के अनुभव को किताबी ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण समझते थे। उनके अनुसार किताबी ज्ञान तो कोई भी प्राप्त कर सकता है परन्तु असल ज्ञान तो अनुभवों से प्राप्त होता है कि हमने कितने जीवन मूल्यों को समझा, जीवन की सार्थकता, जीवन का उद्देश्य, सामाजिक कर्तव्य के प्रति जागरूकता की समझ को हासिल किया। अतः हमारा अनुभव जितना विशाल होगा उतना ही हमारा जीवन सुन्दर और सरल होगा।
6. 'बड़े भाई साहब' कहानी में दोनों भाईयों में स्वभावगत अनेक अंतर थे। इसके बावजूद दोनों भाईयों के जीवन-मूल्य एक समान थे। दोनों भाईयों के आपस में प्रेम, सम्मान में कोई कमी न थी। घर-परिवार से दूर रहने के कारण एक ओर बड़ा भाई जहाँ एक अभिभावक की भूमिका अदा कर रहा था वहीं दूसरी ओर छोटा भाई अपने बड़े भाई की हर एक नसीहत को बिना किसी प्रश्न के चुपचाप मान लेता था। दोनों भाईयों के इस आपसी मेलजोल और सम्मान की भावना

में परिवार से प्राप्त जीवन मूल्यों की अहम् भूमिका है। परिवार से मिले इन्हीं जीवन मूल्यों के कारण दोनों भाईयों में इतना मेलजोल था।

7. अहंकार मनुष्य का विनाश करता है- इस कथन को स्पष्ट करने के लिए बड़े भाई साहब ने रावण, शैतान, शाहेरूम का उदाहरण दिया है।

रावण चक्रवर्ती राजा था। बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे। यहाँ तक की आग और पानी भी उसके दास थे। मगर उसका क्या अंत हुआ घमंड ने उसका नामोनिशान तक मिटा डाला। भूमंडल के स्वामी को मरते समय चुल्लू में पानी देने वाला भी नहीं बचा था।

शैतान को भी इस बात का घमंड हो गया कि ईश्वर का उससे बढ़कर कोई भक्त नहीं इसका नतीजा क्या निकला ईश्वर ने उसे स्वर्ग से नरक में धकेल दिया।

उसी प्रकार शाहेरूम ने भी एक बार अहंकार किया था इसलिए वह भी ख माँग-माँगकर मर गया।

अतः बड़े भाई साहब छोटे भाई को यही समझा रहे थे कि बिना परिश्रम किये एक बार परीक्षा में पाई गई सफलता मानो जैसी अंधे के हाथ में बटेर लगने जैसी है। परंतु बटेर एक बार हाथ लग सकती है बार-बार नहीं इसलिए छोटा भाई परिश्रम और मेहनत से मुँह न चुराए।

8. बड़े भाई होने के नाते वे अपने छोटे भाई के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहते थे। उन्हें अपने नैतिक कर्तव्य का ज्ञान था वे अपने किसी भी कार्यो द्वारा अपने छोटे भाई के सामने गलत उदाहरण रखना नहीं चाहते थे जिससे कि उनके छोटे भाई पर बुरा असर पड़े। इसलिए बड़े भाई के स्वभाव में कड़ाई दिखाई देती थी।

अपने छोटे भाई को कनकौआ उड़ाते देखते समय जब वे एक कनकौआ नीचे गिरता हुआ देखते हैं तो उसकी डोर पकड़कर बेतहाशा होस्टल की ओर दौड़ने

लगते हैं इस घटना से पता चलता है कि बड़े भाई साहब के भीतर भी एक बच्चा है परंतु जिसे केवल अपने छोटे भाई की भलाई के लिए दबाए रखते थे।

पाठ 2 : डायरी का एक पन्ना

1. बड़े बाजार के प्रायः मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहराने का मुख्य कारण आज़ादी की खुशियाँ मनाना था। लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर अपनी देशभक्ति का प्रमाण, राष्ट्रीय झंडे का सम्मान तथा देश की स्वतंत्रता की ओर संकेत देना चाह रहे थे।
2. लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर अपनी देशभक्ति का प्रमाण, राष्ट्रीय झंडे का सम्मान तथा देश की स्वतंत्रता की ओर संकेत देना चाह रहे थे।
3. 26 जनवरी का दिन अपने आप में ही निराला था क्योंकि इस दिन को निराला बनाने के लिए कलकत्तावासी हर संभव प्रयास कर रहे थे। निषेधाज्ञा के बावजूद सैकड़ों लोग तीन बजे से ही पार्क में पहुँच रहे थे। स्त्रियाँ भी जुलूस में बढ़चढ़कर भाग ले रही थी।
4. यहाँ पर पुलिस कमिश्नर के द्वारा कानून को भंग करने की बात की गई है- इस कानून के अनुसार किसी भी प्रकार की सभा को आयोजित या उसमें भाग लेने की मनाही थी।
मेरे विचार से यह कानून भंग करना अति आवश्यक था क्योंकि यदि ऐसा न किया जाता तो देश में स्वतंत्रता की आग को और बढ़ावा न मिलता। साथ ही अंग्रेजों के कानून को भंग करना उनके लिए खुली चुनौती थी यह देश भारतीयों का था, है और रहेगा।

5. 26 जनवरी 1931 को गुलाम भारतवर्ष में दूसरा स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। कलकत्ता वासियों ने इस जश्न में बड़े जोर-शोर से भाग लिया था। लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर अपनी देशभक्ति का प्रमाण, राष्ट्रीय झंडे का सम्मान तथा देश की स्वतंत्रता की ओर संकेत देना चाह रहे थे। दूसरी तरफ अंग्रेज इस जश्न को विफल बनाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रहे थे। पुलिस द्वारा निषेधाज्ञा लागू कर दी गई थी। पार्कों और मैदानों को पुलिस द्वारा सवेरे ही घेर लिया गया था। लोगों को रोकने के लिए पुलिस ने लाठी-चार्ज का भी सहारा लिया। पुलिस ने स्त्रियों को भी नहीं बक्शा उनपर भी लाठी-चार्ज किया, पर इस अत्याचार के बावजूद मोनुमेंट पर भारी तादाद में लोग पहुँचे, झंडा फहराया गया और शपथ पढ़ी जिससे यह साबित हो गया कि वे सरकार द्वारा बनाए अमानवीय कानूनों से नहीं डरते हैं।
6. मोनुमेंट पर ही शाम को सभा होनी थी तथा प्रतिज्ञा-पत्र पढ़ा जाना था। वहाँ बड़ी तादाद में लोगों ने पहुँचकर अंग्रेज सरकार को खुली चुनौती दी थी। अंग्रेज अफसर इस सभा को असफल करने के लिए लाठी-चार्ज कर दिया था। इसलिए मोनुमेंट पर इस लाठी-चार्ज के कारण लोग ज्यादा घायल हुए।
7. यहाँ ओपन लड़ाई का तात्पर्य पुलिस और कौंसिल के अपने-अपने शक्ति-परीक्षण से था। एक ओर पुलिस कमिश्नर ने यह नोटिस निकाल दिया कि अमुक धाराओं के चलते कोई सार्वजनिक सभा नहीं हो सकती। सभी कार्यकर्ताओं को नोटिस भेज दिया कि सभा में भाग लेनेवाले को दोषी समझा जाएगा। वहीं दूसरी ओर कौंसिल ने भी यह ऐलान कर दिया कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर मोनुमेंट के नीचे तिरंगा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी अतः सर्व साधारण की उपस्थिति अनिवार्य है। इसे ही कौंसिल की ओर से पुलिस से ओपन लड़ाई कहा गया है।

8. कलकत्ता वासियों के किए 26 जनवरी 1931 का दिन इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि पिछले वर्ष गुलाम भारत ने पहली बार इसी दिन स्वतंत्रता दिवस मनाया था और इस वर्ष कलकत्तावासी इस दिन की वर्षगाँठ मनानेवाले थे।
9. 26 जनवरी का दिन अपने आप में निराला था क्योंकि इस दिन को निराला बनाने के लिए कलकत्तावासी हर संभव प्रयास कर रहे थे। निषेधाज्ञा के बावजूद सैकड़ों लोग तीन बजे से ही पार्क में पहुँच रहे थे। स्त्रियाँ भी जुलूस में बढ़चढ़कर भाग ले रही थीं।
10. जुलूस के लाल बाज़ार पहुँचते ही पुलिस ने जुलूस पर लाठियाँ बरसाना शुरू कर दिया। सुभाष बाबू को पकड़कर जेल भेज दिया गया। मदालसा बजाज भी पुलिस द्वारा पकड़ ली गई। इस जुलूस में कई लोग घायल और गिरफ्तार हो गए।
11. सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की विशेष और बड़ी अहम् भूमिका रही है। स्त्रियों ने अपने-अपने तरीकों से जुलूस निकाला। जानकी देवी और मदालसा बजाज जैसी स्त्रियों ने जुलूस का सफल नेतृत्व किया। झंडोत्सव में पहुँचकर मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़कर झंडा फहराकर घोषणापत्र पढ़ा। करीब 105 स्त्रियों ने पुलिस को अपनी गिरफ्तारी दी और अंग्रेजों के अत्याचार का सामना किया।

पाठ 3 : ततार्रा-वामीरो कथा

1. ततार्रा-वामीरो एक लोक कथा है। यह देश के उन द्वीपों की कथा है जो आज लिटिल अंदमान और कार-निकोबार नाम से जाने जाते हैं। ततार्रा वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार की सदियों से चल रही रुढ़िवादी परम्परा में

परिवर्तन आया। उन दोनों की मृत्यु के पश्चात् गाँव वाले दूसरे गाँववालों से भी वैवाहिक सम्बन्धों को स्थापित करने लगे। इस तरह समाज को यह बताने के लिए कि प्रेम समाज को जोड़ता है और घृणा से दूरियाँ बढ़ती ततार्रा-वामीरो की प्रेमकथा निकोबारियों के घर-घर सुनाई जाती है।

2. ततार्रा की तलवार के बारे में लोगों का मत था कि उसकी तलवार भले साधारण लकड़ी की थी पर तलवार में अद्भुत, विलक्षण और दैवीय शक्ति थी।
3. ततार्रा वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार की सदियों से चल रही रुढ़िवादी परम्परा में परिवर्तन आया। उन दोनों की मृत्यु के पश्चात् गाँव वाले दूसरे गाँववालों से भी वैवाहिक सम्बन्धों को स्थापित करने लगे।
4. वामीरो के मिलने के पश्चात् ततार्रा हर-समय वामीरो के ही खयाल में ही खोया रहता था। उसके लिए वामीरो के बिना एक पल भी गुजारना कठिन-सा हो गया था।
वह शाम होने से पहले ही लपाती की उसी समुद्री चट्टान पर जा बैठता, जहाँ वह वामीरो के आने की प्रतीक्षा किया करता था।
5. रुढ़ियाँ जब बंधन बन बोझ बनने लगे तब उनका टूट जाना ही अच्छा है क्योंकि तभी हम समय के साथ आगे बढ़ पाएंगे। बंधनों में जकड़कर व्यक्ति और समाज का विकास, सुख-आनंद, अभिव्यक्ति आदि रुक जाती है। यदि हमें आगे बढ़ना है तो इन रुढ़िवादी विचारधाराओं को तोड़ना ही होगा।

पाठ 4 : अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

1. अरब में लश्कर को नूह नाम से याद करने का कारण यह है कि एक बार उन्होंने एक जख्मी कुत्ते को दुत्कार दिया था और इसी कारण वे उम्र-भर रोते रहे थे।
2. लेखक के घर में कबूतरों ने दो अंडे दे रखे थे। एक अंडा तो बिल्ली द्वारा तोड़ दिया गया था और दूसरा अंडा लेखक की माँ के बचाने के कारण टूट गया था जिसके कारण वे दुखी हो गई और उसी का प्रायश्चित्त करने के लिए लेखक की माँ ने पूरे दिन का रोजा रखा।
3. लेखक ने ग्वालियर से बम्बई तक अनेक बदलावों को महसूस किया जैसे पहले बड़े-बड़े घर, आँगन और दालान होते थे। अब डिब्बे जैसे घरों में लोगों को गुजारा करना पड़ता है। चारों ओर इमारतें और इमारतें ही पाई जाती हैं। खुले स्थानों, पशु-पक्षियों के रहने के स्थानों का अभाव दिखाई देता है। पहले पशु-पक्षियों को घरों में स्थान मिलता था आज उनके घर आने के रास्तों को ही बंद कर दिया जाता है।
4. आज मानवजाति ने अपनी बुद्धि से विभिन्न प्रजातियों के बीच बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। बढ़ती आबादी ने समंदर तक को नहीं बखशा उसे भी पीछे सरकाना शुरू कर दिया, पेड़ों को रास्ते से हटाना शुरू कर दिया, फलस्वरूप बढ़ते प्रदूषण ने पंछियों को उजाड़ना शुरू कर दिया। बारूदों की विनाश लीलाओं ने वातावरण को सताना शुरू कर दिया। प्रकृति में आए असंतुलन का भयंकर दुष्परिणाम हुआ। अब गरमी में ज्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, भूकंप, बाढ़, तूफान आने शुरू हो गए। नित्य नए रोग होने लगे। प्रदूषण का खतरा बढ़ता चला जा रहा है।

5. समुद्र का लगातार सिमटना समुद्र के गुस्से की वजह थी। कई वर्षों से बड़े-बड़े बिल्डर समुद्र को पीछे धकेलकर उसकी जमीन पर कब्ज़ा कर रहे थे और बेचारा समुद्र लगातार अपना स्वरूप छोटा बनाते हुए सिमटता चला जा रहा था। पहले तो उसने अपनी टाँगों को समेटा, फिर उकड़ूँ बैठ गया फिर वह खड़ा हो गया। यह प्रक्रिया निरंतर चलती ही रही तो समुद्र को गुस्सा आ गया। जब उसे गुस्सा आया तो उसने गुस्से में अपनी लहरों पर दौड़ते तीन जहाज़ों को उठाकर तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक वर्ली के समुद्र किनारे, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने और तीसरा गेट-वे-ऑफ़ इंडिया पर गिरा।
6. लेखक की माँ के जीव-जंतु और वनस्पति जगत के बारे में बड़े ही नेक विचार थे। लेखक की माँ सूरज ढलने पर पेड़-पौधों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थी। दरिया को सलाम करने और कबूतरों और मुर्गों को न सताने के लिए कहा करती थी।
7. आज मानवजाति ने अपनी बुद्धि से विभिन्न प्रजातियों के बीच बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। बढ़ती आबादी ने समंदर तक को नहीं बख्शा उसे भी पीछे सरकाना शुरू कर दिया, पेड़ों को रास्ते से हटाना शुरू कर दिया, फलस्वरूप बढ़ते प्रदूषण ने पंछियों को उजाड़ना शुरू कर दिया। बारूदों की विनाश लीलाओं ने वातावरण को सताना शुरू कर दिया। प्रकृति में आए असंतुलन का भयंकर दुष्परिणाम हुआ। अब गरमी में ज्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, भूकंप, बाढ़, तूफान आने शुरू हो गए। नित्य नए रोग होने लगे। प्रदूषण का खतरा बढ़ता चला जा रहा है।

8. 'धरती किसी एक की नहीं है' पंक्ति से आशय धरती पर रहने वाले सभी प्राणियों के समान हक से है। लेखक के कहने का तात्पर्य यह है कि संसार की रचना भले कैसी भी क्यों न हुई हो लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। धरती पर सभी जीव-जंतुओं, सागर, पर्वत, नदी, पंछी मानव आदि सभी की बराबर हिस्सेदारी है। ये अलग बात है कि मानव ने अपनी बुद्धिमत्ता का प्रयोग करके धरती पर अपना एकाधिकार स्थापित कर दिया है। मानव यदि सभी का भला चाहता है तो उसे अपनी इस सोच और स्वार्थ पर अंकुश लगाना होगा।
9. शेख अयाज के पिता अपने बाजू पर काला च्योंटा रेंगता देख भोजन छोड़ कर उस च्योंटे को कुएँ पर छोड़ने के लिए उठ खड़े हुए क्योंकि उनके अनुसार उन्होंने उस च्योंटे को घर से बेघर कर दिया था अतः बिना समय गवाँए वे उस च्योंटे को उसके घर अर्थात् कुएँ पर छोड़ आते हैं।
यहाँ पर हमें शेख अयाज के समानता, मनुष्यता और अपनी गलती को मानकर उसका तुरंत सुधार करनेवाले, दूसरों के दुःख से द्रवित हो जाना जैसे व्यक्तित्व की विशेषताओं का पता चलता है।
10. इन उक्ति के द्वारा लेखक यह कहना चाहता है कि ईश्वर की नजर में सभी प्राणी और मनुष्य एक है। सभी को बनानेवाला वह एक ही ईश्वर है। अतः वह किसी में कोई भेदभाव नहीं करता है। सभी प्राणी धरती में जन्म लेते हैं और इसी धरती में विलीन भी हो जाते हैं।
11. आज बढ़ती आबादी का परिणाम सबसे अधिक हमारे पर्यावरण पर हो रहा है। बढ़ती आवास की समस्या से निपटने के लिए मानव ने समुद्र की लहरों तक को सीमित कर दिया है। समुद्र के रेतीले तटों को भी मानवों ने नहीं छोड़ा है

वहाँ पर भी इंसानों ने बस्ती बसा दी है। आसपास के जंगल काट-काटकर नष्ट कर डाले हैं। पेड़ों को रास्तों से हटा दिया।

परिणामस्वरूप पशु-पक्षी के लिए आवास ही नहीं बचे हैं। प्राकृतिक आपदाएँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। कहीं भूकंप, कहीं बाढ़, कहीं तूफान, कभी गर्मी, कभी तेज़ वर्षा इन के कारण कई बीमारियाँ हो रही हैं। इस तरह बढ़ती आबादी के असंतुलन का जनजीवन तथा पर्यावरण पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

इन सबसे निपटने का एक ही उपाय है समाज में आबादी के प्रति जागरूकता लाना। नागरिकों को इसके दुष्परिणामों को समझाना और इसे रोकने के उपायों के प्रति भी जागृति फैलाना। इसके साथ ही सीमित संसाधनों के उपयोग के बारे में बताना भी अति आवश्यक है। पर्यावरण मानव और जीव-जंतु के लिए कितना अहम् है इस ओर से युद्ध स्तर पर प्रयास होना चाहिए।

12. प्रस्तुत पाठ 'अब कहाँ दूसरों के दुःख से दुखी होने वाले' के माध्यम से लेखक ने यह स्पष्ट करना चाहा है कि समय के साथ लोगों के व्यवहार में भारी परिवर्तन हो चला है। पहले मनुष्य जीव-जंतुओं के प्रति भी संवेदनशील हुआ करता था। लेखक ने 'सुलेमान' के उदाहरण द्वारा ये बात स्पष्ट की है कि किस प्रकार चींटियों को उन्होंने अपने लश्कर से भयमुक्त कर दिया था। इसी प्रकार शेख अयाज भी अपना भोजन छोड़कर एक च्योंटे को उसके घर वापस छोड़ने जाते हैं। नूह नाम के एक पैंगबर द्वारा एक कुत्ते के दिल को ठेस पहुँचाने लिए उम्रभर रोने में भी यही दुःख का भाव झलकता है। लेखक की माँ भी शाम के समय पेड़ की पत्तियों को तोड़ने से मना, दरिया को सलाम करना और मुर्गे और कबूतरों जैसे जीवों को न सताने की बात कहती थी। परन्तु आज विपरीत परिस्थिति है लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए जीव-जंतुओं के आशियाने तक को उजाड़ने लगे हैं। लेखक की पत्नी का स्वयं कबूतरों को रोकने के लिए

जाली लगवाना यह दर्शाता है कि अब लोगों में वह पहली जैसी भावुकता नहीं रह गई है।

पाठ 5 : पतझर में दूटी पत्तियाँ

1. शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग इसलिए होता है क्योंकि शुद्ध सोना बिना किसी मिलावट के होता है। यह पूरी तरह शुद्ध होता है गिन्नी के सोने में थोड़ा-सा ताँबा मिलाया होता है, इसलिए वह ज्यादा चमकता है और शुद्ध सोने से मजबूत भी होता है।
2. पाठ के सन्दर्भ में शुद्ध आदर्श वह है जिसमें हानि-लाभ की गुंजाइश नहीं होती है। अर्थात् शुद्ध आदर्शों पर व्यावहारिकता हावी नहीं होती। जिसमें पूरे समाज की भलाई छिपी हुई हो तथा जो समाज के शाश्वत मूल्यों को बनाए रखने में सक्षम हो, वही शुद्ध आदर्श है।
3. प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट उन्हें कहते हैं जो आदर्शों को व्यवहारिकता के साथ प्रस्तुत करते हैं।
4. गाँधीजी के नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी उन्होंने अपने सारे आंदोलनों को को व्यावहारिकता के स्तर से आदर्शों के स्तर पर चढ़कर चलाया था। इसीलिए उनके सारे आंदोलन भारत छोड़ो, सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, दांडीमार्च सफल हुए। उन्होंने सत्य और अहिंसा को अपने आदर्शों का हथियार बनाया। इन्हीं सिद्धांतों के बलबूते पर उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य से टक्कर ली। उनके नेतृत्व में लाखों भारतीयों ने उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया। देशवासी उनके नेतृत्व को स्वीकार करके गर्व का अनुभव करते थे।

5. आदर्शवादी लोग समाज को आदर्श रूप में रखने वाली राह बताते हैं। आदर्शवादी लोग ही समाज में मूल्यों की स्थापना करते हैं। जब समाज एक आदर्श स्थापित करता है और जो सबके हित में सर्वमान्य हो जाता है वही आदर्श मूल्य बन जाता है। जबकि व्यवहारिक आदर्शवाद वास्तव में व्यवहारिकता ही है। उसमें आदर्शवाद कहीं नहीं होता है।
6. चाजीन ने टी-सेरेमनी से जुड़ी सभी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से की। यह सेरेमनी एक पर्णकुटी में पूर्ण हुई। चाजीन द्वारा अतिथियों का उठकर स्वागत करना, आराम से अँगीठी सुलगाना, चायदानी रखना, दूसरे कमरे से चाय के बर्तन लाना, उन्हें तौलिए से पोंछना व चाय को बर्तनों में डालने आदि की सभी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग अर्थात् बड़े ही आराम से, अच्छे व सहज ढंग से की। चाय पीने के बाद लेखक ने महसूस किया कि जैसे उनके दिमाग की गति मंद पड़ गई हो। धीरे-धीरे उसका दिमाग चलना भी बंद हो गया यहाँ तक की उन्हें कमरे में पसरे हुए सन्नाटे की आवाज़ें भी सुनाई देने लगीं। उन्हें लगा कि मानो वे अनंतकाल से जी रहे हैं। वे भूत और भविष्य दोनों का चिंतन न करके वर्तमान में जी रहे हो।
7. जापानी लोग उन्नति की होड़ में सबसे आगे हैं। जापानी अति तीव्र गति से प्रगति करना चाहते हैं। एक महीने का काम एक दिन में करने का प्रयास करते हैं। इस कारण ऐसा लगता है जैसे जापानी लोग चलते नहीं बल्कि दौड़ते हैं, बोलते नहीं बल्कि बकते हैं, जब अकेले हो तो स्वयं से ही बात करने लगते हैं। इसलिए लेखक ने जापानियों के दिमाग में स्पीड का इंजन लगने की बात कही है।

8. लेखक के मित्र ने मानसिक रोग का मुख्य कारण अमेरिका से आर्थिक प्रतिस्पर्धा को बताया। जिसके परिणामस्वरूप देश के लोग एक महीने का काम एक दिन में करने का प्रयास करते हैं इस कारण वे शारीरिक व मानसिक रूप से बीमार रहने लगे हैं। लेखक के ये विचार सत्य हैं क्योंकि शरीर और मन मशीन की तरह कार्य नहीं कर सकते और यदि उन्हें ऐसा करने के लिए विवश किया तो मानसिक संतुलन बिगड़ जाना स्वाभाविक है।
9. सत्य, अहिंसा, परोपकार, ईमानदारी सहिष्णुता आदि मूल्य शाश्वत मूल्य हैं। वर्तमान समय में भी इनकी प्रासंगिकता बनी हुई है क्योंकि आज भी सत्य और अहिंसा के बिना राष्ट्र का कल्याण और उन्नति नहीं हो सकती है। शांतिपूर्ण जीवन बिताने के लिए परोपकार, त्याग, एकता, भाईचारा तथा देश-प्रेम की भावना का होना अत्यंत आवश्यक है। यदि हम आज भी परोपकार और ईमानदारी के मार्ग पर चले तो समाज को अलगाव से बचाया जा सकता है।
10. जापान में तनावमुक्त होने के लिए चा-नो-यू अर्थात् चाय पीने की एक विशेष विधि जो झेन परंपरा की देन है। लेखक ने जब इस परंपरा का अनुभव लिया तो उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि जैसे उनके दिमाग की गति मंद पड़ गई हो। धीरे-धीरे उसका दिमाग चलना भी बंद हो गया यहाँ तक की उन्हें कमरे में पसरे हुए सन्नाटे की आवाज़ें भी सुनाई देने लगीं थी। उन्हें लगा कि मानो वे अनंतकाल से जी रहे थे। वे भूत और भविष्य दोनों का चिंतन न करके वर्तमान में जी रहे हो।

पाठ 6 : कारतूस

1. कर्नल कालिंज का खेमा जंगल में वज़ीर अली की गिरफ्तारी के लिए लगा हुआ था।
2. रॉबिनहुड की ही तरह वज़ीर अली भी साहसी, बहादुर और चकमा देने में माहिर था। वह कई दिनों से अंग्रेजों को चकमा दे रहा था और उनकी पकड़ में ही नहीं आ रहा था। कम्पनी के वकील को उसने उसके घर में जाकर मार दिया था। इसलिए कर्नल को वज़ीर अली के बहादुरी भरे अफ़साने सुनकर रॉबिनहुड की याद आ जाती थी।
3. लेफ्टिनेंट को कर्नल ने जब यह बताया कि वज़ीर अली ही नहीं बल्कि दक्षिण में टीपू सुलतान बंगाल में नवाब के भाई शम्सुद्दौला भी कंपनी के खिलाफ़ हैं और इन्होंने अफगानिस्तान के बादशाह शाहे-जमा को आक्रमण करने का न्योता भेजा है तब लेफ्टिनेंट को ऐसा लगा कि कंपनी के खिलाफ सारे हिंदुस्तान में एक लहर दौड़ गई है।
4. सआदत अली और कर्नल दोस्त थे। सआदत अली को कर्नल पर विश्वास भी था। सआदत अली को ऐशों आराम की जिंदगी बिताना पसंद था इसलिए वह खुद तो ऐशो आराम की जिंदगी बिताएगा साथ ही दोस्त और विश्वासपात्र होने के कारण कर्नल की जिंदगी भी बड़े आराम से गुजरेगी। इस तरह सआदत अली को अवध के तख्त पर बिठाने के पीछे कर्नल का मकसद अवध की धन-दौलत पर कब्ज़ा करना था।
5. सआदत अली वज़ीर अली का चाचा और नवाब आसिफ़उद्दौला का भाई था। सआदत अली आराम पसंद अंग्रेजों का पिट्टू था। उसने अंग्रेजों को आधी

सम्पत्ति और दस लाख रुपये दिए। जब तक आसिफउदौला के कोई सन्तान नहीं थी, सआदत अली की नवाब बनने की पूरी सम्भावना थी। इसलिए जब वज़ीर अली की पैदाइश हुई तो उन्हें वे खतरा लगने लगे।

6. कंपनी के वकील का क़त्ल करने के बाद वज़ीर अली आजमगढ़ भाग गया और वहाँ के नवाब से सहायता पाकर सुरक्षित घाघरा पहुँच गए। अंग्रेजों पर सीधा हमला करने के बजाय उसने नेपाल जाकर अपनी शक्ति बढ़ाने की सोची। इसके साथ ही उसने अफगानिस्तान के बादशाह शाहे ज़मा को हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का न्योता दे दिया। वज़ीर अली की इस कुशल नीति के चलते अंग्रेज इस दो तरफ़ा हमले से घबरा जाएँगे और इसके परिणामस्वरूप वह अवध पर बड़ी आसानी से कब्ज़ा कर लेगा। ये सब बातें यह सिद्ध करती हैं की वज़ीर अली एक नीतिकुशल योद्धा था।
7. वज़ीर अली को उसके नवाबी पद से हटा दिया गया और बनारस भेज दिया गया था। फिर कुछ महीनों बाद उन्हें कलकत्ता बुलवाया तो वज़ीर अली ने कंपनी के वकील, जो कि बनारस में रहता था, उससे शिकायत की परन्तु उसने शिकायत सुनने की जगह वज़ीर अली को खूप खरी-खोटी सुनाई। इस पर वज़ीर अली को गुस्सा आ गया और उसने वकील का कत्ल कर दिया।
8. सवार जो कि स्वयं वज़ीर अली ही था। कर्नल के खेमे में वेश बदलकर कर्नल को अपनी बातों से प्रभावित कर कर्नल को स्वयं को ही पकड़वाने की सहायता देने का जाल बिछाकर बड़ी ही चतुराई से कारतूतों को प्राप्त करता है।
9. वज़ीर अली का निर्भयता से शत्रु के खेमे में अकेले जाना दुश्मनों से ही कारतूतों को प्राप्त करना, वकील की अपमानजनक बात को सहन न करना और उसी के

घर में उसकी हत्या करना और देश की आज़ादी के लिए अपने प्राण न्योछावर करने के लिए तत्पर होना ये सभी वज़ीर अली की जाँबाजी को सिद्ध करते हैं।

10. यह कथन कर्नल ने वज़ीर अली के विषय में कहा था। इस कथन से वज़ीर अली की विशेषता सिद्ध होती है कि भले ही वज़ीर अली के पास मुठ्ठीभर आदमी थे परन्तु उसके साहस और जाँबाजी असंख्य लोगों का मुकाबला कर सकती थी। वज़ीर अली वध के नवाब का पुत्र था। अंग्रेजों ने उसको राजगद्दी से हटाकर उसके चाचा को गद्दी सौंप दी, जिससे वह अंग्रेजों के खिलाफ हो गया। उसका मकसद यही था कि वह किसी तरह अंग्रेजों को इस देश से भगाये। वज़ीर अली बहादुर, साहसी निर्भय और चालाक था। उसने अंग्रेज सरकार के खिलाफ डटकर संघर्ष किया। वज़ीर अली अपने चाहने वालों में रॉबिनहुड की तरह प्रसिद्ध था। वह इतना निडर और साहसी था कि वो निडर होकर दुश्मन अर्थात् अंग्रेजों के खेमे में घुस गया और कर्नल से कारतूस माँग लिये। कर्नल भी उसका दुस्साहस देखकर दंग रह गया। उसकी बहादुरी की तारीफ उसके विरोधी और दुश्मन भी करते थे और अंग्रेज कर्नल ने भी ये कथन उसकी तारीफ के संदर्भ में किया था।

[काव्य खंड]

कविता 1 : कबीर

1. हमारा मन अज्ञानता, अहंकार, विलासिताओं में डूबा है। ईश्वर सब ओर व्याप्त है। वह निराकार है। हम मन के अज्ञान के कारण ईश्वर को पहचान नहीं पाते। कबीर के मतानुसार कण-कण में छिपे परमात्मा को पाने के लिए ज्ञान का होना अत्यंत आवश्यक है। अज्ञानता के कारण जिस प्रकार मृग अपने नाभि में स्थित कस्तूरी पूरे जंगल में ढूँढता है, उसी प्रकार हम अपने मन में छिपे ईश्वर को मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा सब जगह ढूँढने की कोशिश करते हैं।

2. कबीर के अनुसार जो व्यक्ति केवल सांसारिक सुखों में डूबा रहता है और जिसके जीवन का उद्देश्य केवल खाना, पीना और सोना है। वही व्यक्ति सुखी है।
कवि के अनुसार 'सोना' अज्ञानता का प्रतीक है और 'जागना' ज्ञान का प्रतीक है। जो लोग सांसारिक सुखों में खोए रहते हैं, जीवन के भौतिक सुखों में लिप्त रहते हैं वे सोए हुए हैं और जो सांसारिक सुखों को व्यर्थ समझते हैं, अपने को ईश्वर के प्रति समर्पित करते हैं वे ही जागते हैं।
ज्ञानी व्यक्ति जानता है कि संसार नश्वर है फिर भी मनुष्य इसमें डूबा हुआ है। यह देखकर वह दुखी हो जाता है। वे संसार की दुर्दशा को दूर करने के लिए चिंतित रहते हैं, सोते नहीं है अर्थात् जाग्रत अवस्था में रहते हैं।
3. कबीर ने अपने दोहे में हिरण का उदहारण ईश्वर को बाह्य आडंबरों में व्यर्थ खोजने के प्रयास में किया है। जिस प्रकार मृग की नाभि में कस्तूरी रहती है किन्तु वह उसे जंगल में ढूँढता है। उसी प्रकार मनुष्य भी अज्ञानतावश वास्तविकता को नहीं जानता कि ईश्वर हर देह घट में निवास करता है और उसे प्राप्त करने के लिए धार्मिक स्थलों, अनुष्ठानों में ढूँढता रहता है।
4. कबीर का कहना है कि स्वभाव को निर्मल रखने के लिए मन का निर्मल होना आवश्यक है। हम अपने स्वभाव को निर्मल, निष्कपट और सरल बनाए रखना चाहते हैं तो हमें अपने आँगन में कुटी बनाकर सम्मान के साथ निंदक को रखना चाहिए। निंदक हमारे सबसे अच्छे हितैषी होते हैं। उनके द्वारा बताए गए त्रुटियों को दूर करके हम अपने स्वभाव को निर्मल बना सकते हैं।
5. मीठी वाणी का प्रभाव चमत्कारिक होता है। मीठी वाणी जीवन में आत्मिक सुख व शांति प्रदान करती है। मीठी वाणी मन से क्रोध और घृणा के भाव नष्ट कर देती है। इसके साथ ही हमारा अंतःकरण भी प्रसन्न हो जाता है। प्रभाव स्वरूप

औरों को सुख और शीतलता प्राप्त होती है। मीठी वाणी के प्रभाव से मन में स्थित शत्रुता, कटुता व आपसी ईर्ष्या-द्वेष के भाव समाप्त हो जाते हैं।

6. कबीर के अनुसार भक्ति मार्ग में सबसे बड़ी रुकावट अहंकार है। अहंकारी व्यक्ति को कभी भी ईश्वर की भक्ति प्राप्त नहीं हो सकती है। जिस प्रकार अँधेरा और उजाला एक साथ, एक ही समय साथ में नहीं रह सकते हैं, ठीक उसी प्रकार से जब तक मनुष्य में अज्ञान रूपी अंधकार छाया है वह ईश्वर को नहीं पा सकता। अर्थात् अहंकार और ईश्वर का साथ-साथ रहना नामुमकिन है। यह भावना दूर होते ही वह ईश्वर को पा लेता है।

कविता 2 : मीरा

1. मीरा श्रीकृष्ण को सम्बोधित करते हुए कहती हैं कि हे श्रीकृष्ण! आप सदैव अपने भक्तों की पीड़ा दूर करते हैं। प्रभु जिस प्रकार आपने द्रौपदी का वस्त्र बढ़ाकर भरी सभा में उसकी लाज रखी, नरसिंह का रूप धारण करके हिरण्यकश्यप को मार कर प्रह्लाद को बचाया, मगरमच्छ ने जब हाथी को अपने मुँह में ले लिया तो उसे बचाया और पीड़ा भी हरी। हे प्रभु! इसी तरह मुझे भी हर संकट से बचाकर पीड़ा मुक्त करो। मीरा सांसारिक बंधनों से मुक्ति के लिए भी विनती करती हैं।
2. मीराबाई ने कृष्ण को प्रियतम के रूप में देखा है। वे बार-बार कृष्ण के दर्शन करना चाहती हैं। वे कृष्ण को पाने के लिए अनेकों कार्य करने को तैयार हैं। वह सेविका बन कर उनकी सेवा कर उनके साथ रहना चाहती हैं, उनके विहार करने के लिए बाग बगीचे लगाना चाहती हैं। वृंदावन की गलियों में उनकी लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं, ऊँचे-ऊँचे महलों में खिड़कियाँ बनवाना चाहती हैं ताकि आसानी से कृष्ण के दर्शन कर सकें। वे उनके दर्शन के लिए कुसुम्बी रंग

की साड़ी पहनकर यमुना के तट पर आधी रात को प्रतीक्षा करने को तैयार हैं। वे अपने आराध्य को मिलने के लिए हर सम्भव प्रयास करने के लिए तैयार हैं।

3. मीराबाई ने कृष्ण को प्रियतम के रूप में देखा है। वे बार-बार कृष्ण के दर्शन करना चाहती हैं। वे कृष्ण को पाने के लिए अनेकों कार्य करने को तैयार हैं। वह सेविका बन कर उनकी सेवा कर उनके साथ रहना चाहती हैं, उनके विहार करने के लिए बाग बगीचे लगाना चाहती हैं। वृंदावन की गलियों में उनकी लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं, ऊँचे-ऊँचे महलों में खिड़कियाँ बनवाना चाहती हैं ताकि आसानी से कृष्ण के दर्शन कर सकें। वे उनके दर्शन के लिए कुसुम्बी रंग की साड़ी पहनकर यमुना के तट पर आधी रात को प्रतीक्षा करने को तैयार हैं। वे अपने आराध्य को मिलने के लिए हर सम्भव प्रयास करने के लिए तैयार हैं।
4. मीरा कृष्ण की अनन्य भक्त हैं वे प्रभु के दर्शन पाने के लिए अनेकों तर्क देती हैं कभी वे दास्य भाव से अनुनय करते हुए कृष्ण को दर्शन देने का आग्रह करती हैं, तो कभी उपालंभ का सहारा लेते हुए कहती हैं कि जिस प्रकार उन्होंने द्रौपदी और गजराज का उद्धार किया वैसे ही प्रभु उनका भी उद्धार करें।
5. मीरा श्रीकृष्ण को सर्वस्व समर्पित कर चुकी हैं। वे कृष्ण की दासी बनकर उनके दर्शन का सुख पा सकेगी और उनके समीप रह पाएगी। इस प्रकार मीरा दासी बनकर श्रीकृष्ण के दर्शन, नाम स्मरण रूपी जेब-खर्च और भक्ति रूपी जागीर तीनों प्राप्त कर अपना जीवन सफल बनाना चाहती हैं।
6. मीरा केवल अपने आराध्य कृष्ण का सानिध्य पाने के लिए उनकी चाकरी करना चाहती हैं। चाकरी स्वरूप वह उनके बाग-बगीचे लगाएगी इससे मीरा को ही लाभ होगा ऐसी चाकरी करने से वह अपने आराध्य के सानिध्य में रहकर,

वेतानस्वरूप ईश्वर नाम-स्मरण का सुअवसर पाएँगी जो अंत में उसे भक्ति की जागीर मिलेगी जो सदा उसके पास रहेगी।

यहाँ पर मीरा का प्रभु की चाकरी करने में किसी भी प्रकार के सांसारिक सुखों को प्राप्त करने की मंशा नहीं है क्योंकि ये सारे सांसारिक सुख, वैभव, संपत्ति सब तो अस्थायी होते हैं। सच्ची संपत्ति तो आध्यात्मिक सुखों में अर्थात् ईश्वर की प्राप्ति में होती है। मीरा को यदि सांसारिक सुख प्राप्त करना ही होता तो वह अपने राजपरिवार का त्याग कर यूँ प्रभु-मिलन की आस में अपने घर का परित्याग न करती।

7. भक्ति के विषय में मीरा निरंतर ईश्वर के सुमिरन का संदेश देना चाहती है। मीरा के अनुसार निरंतर सुमिरन से ईश्वर को पाया जा सकता है इसलिए हर समय ईश्वर की याद में लीन रहो।

8. मीरा श्रीकृष्ण को सम्बोधित करते हुए कहती हैं कि हे श्री कृष्ण! आप सदैव अपने भक्तों की पीड़ा दूर करते हैं। प्रभु जिस प्रकार आपने द्रौपदी का वस्त्र बढ़ाकर भरी सभा में उसकी लाज रखी, नरसिंह का रूप धारण करके हिरण्यकश्यप को मार कर प्रह्लाद को बचाया, मगरमच्छ ने जब हाथी को अपने मुँह में ले लिया तो उसे बचाया और पीड़ा भी हरी। हे प्रभु! इसी तरह मुझे भी हर संकट से बचाकर पीड़ा मुक्त करो। मीरा सांसारिक बंधनों से मुक्ति के लिए भी विनती करती हैं।

कविता 3 : दोहे

1. ग्रीष्म के जेठ मास की दोपहर में धूप इतनी तेज होती है कि सिर पर आने लगती है जिससे वस्तुओं की छाया छोटी होती जाती है। इसलिए कवि का कहना है कि जेठ की दुपहरी की भीषण गर्मी में छाया भी त्रस्त होकर छाया ढूँढने लगती है।
2. बिहारी की नायिका अपने प्रिय को पत्र द्वारा संदेश देना चाहती है पर कागज पर लिखते समय कँपकँपी और आँसू आ जाते हैं। नायिका विरह की अग्नि में जल रही है। लिखते समय वह अपने मन की बात बताने में खुद को असमर्थ पाती है। किसी के साथ संदेश भेजेगी तो कहते लज्जा आएगी। इसलिए वह सोचती है कि जो विरह अवस्था उसकी है, वही उसके प्रिय की भी होगी। अतः वह कहती है कि अपने हृदय की वेदना से मेरी वेदना को समझ जाएँगे। कुछ कहने सुनने की जरूरत नहीं रह जाती।
3. बिहारी जी के अनुसार भक्ति का सच्चा रूप हृदय की सच्चाई में निहित है। बिहारी जी ईश्वर प्राप्ति के लिए धर्म कर्मकांड को दिखावा समझते थे। माला जपने, छापे लगवाना, माथे पर तिलक लगवाने से प्रभु नहीं मिलते। जो इन व्यर्थ के आडंबरों में भटकते रहते हैं वे झूठा प्रदर्शन करके दुनिया को धोखा दे सकते हैं, परन्तु भगवान राम तो सच्चे मन की भक्ति से ही प्रसन्न होते हैं।
4. बिहारी ने बताया है कि घर में सबकी उपस्थिति में नायक और नायिका इशारों में अपने मन की बात करते हैं। नायक ने सबकी उपस्थिति में नायिका को इशारा किया। नायिका ने इशारे से मना किया। नायिका के मना करने के तरीके पर नायक रीझ गया। इस रीझ पर नायिका खीज उठी। दोनों के नेत्र मिल जाने

पर आँखों में प्रेम स्वीकृति का भाव आता है। इस पर नायक प्रसन्न हो जाता है और नायिका की आँखों में लजा जाती है।

5. बिहारी ने माला जपने और तिलक लगाने को व्यर्थ कहकर प्रभु की सच्ची और एकनिष्ठ भक्ति का संदेश देना चाहा है। बिहारी जी के अनुसार भक्ति का सच्चा रूप हृदय की सच्चाई में निहित है। बिहारी जी ईश्वर प्राप्ति के लिए धर्म कर्मकांड को दिखावा समझते हैं। माला जपने, छापे लगवाना, माथे पर तिलक लगवाने से प्रभु नहीं मिलते। जो इन व्यर्थ के आडंबरों में भटकते रहते हैं वे झूठा प्रदर्शन करके दुनिया को धोखा दे सकते हैं, परन्तु भगवान राम तो सच्चे मन की भक्ति से ही प्रसन्न होते हैं।

6. ग्रीष्म ऋतू की भीषण गर्मी से सारे हिंसक और अहिंसक पशु एक साथ रह रहे हैं और यह एक तपोवन में ही हो सकता है इसलिए बिहारी ने सारे जगत को तपोवन-सा कहा है।

ग्रीष्म ऋतू की भीषण गर्मी से पूरा जंगल तपोवन जैसा पवित्र बन जाता है। यहाँ कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि इस समय सबकी आपसी दुश्मनी समाप्त हो जाती है। साँप, हिरण और सिंह सभी गर्मी से बचने के लिए साथ रह रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे तपस्वी का सानिध्य पाकर ये आपसी वैर-भाव भूल गए हैं।

7. नटखट राधा श्रीकृष्ण का सानिध्य अधिक से अधिक चाहती हैं। गोपियाँ बात करने की लालसा में कृष्ण की बाँसुरी छिपा लेती हैं। वे नटखट कृष्ण से प्रेम-भरी बातें करना चाहती हैं। इस उद्देश्य से वे जानबूझकर कृष्ण की बाँसुरी छिपा लेती हैं, ताकि इसी बहाने वे उनसे बातें करें। वे (श्रीकृष्ण) उनसे अपनी

बाँसुरी वापिस पाने के लिए विनती करें तथा अपना बाकी समय उनके साथ बात करते हुए बिताएँ।

8. बिहारी जी के अनुसार भक्ति का सच्चा रूप हृदय की सच्चाई में निहित है। बिहारी जी ईश्वर प्राप्ति के लिए धर्म कर्मकांड को दिखावा समझते थे। माला जपने, छापे लगवाना, माथे पर तिलक लगवाने से प्रभु नहीं मिलते। जो इन व्यर्थ के आडंबरों में भटकते रहते हैं वे झूठा प्रदर्शन करके दुनिया को धोखा दे सकते हैं, परंतु भगवान राम तो सच्चे मन की भक्ति से ही प्रसन्न होते हैं।

कविता 4 : मनुष्यता

1. 'मनुष्यता' कविता के आधार पर स्वार्थपूर्ण जीवन को पशु-प्रवृत्ति कहा गया है।
2. उदार व्यक्ति परोपकारी होता है। अपना पूरा जीवन पुण्य व लोकहित कार्यों में बिता देता है। किसी से भेदभाव नहीं रखता, आत्मीय भाव रखता है। कवि और लेखक भी उसके गुणों की चर्चा अपने लेखों में करते हैं। वह निज स्वार्थों का त्याग कर जीवन का मोह भी नहीं रखता। अर्थात् उदार व्यक्ति के मन, वचन, कर्म से संबंधित कार्य मानव मात्र की भलाई के लिए ही होते हैं।
3. प्रत्येक मनुष्य समयानुसार अवश्य मृत्यु को प्राप्त होता है क्योंकि जीवन नश्वर है। इसलिए मृत्यु से डरना नहीं चाहिए बल्कि जीवन में ऐसे कार्य करने चाहिए जिससे उसे बाद में भी याद रखा जाए। उसकी मृत्यु व्यर्थ न जाए। जो केवल अपने लिए जीते हैं वे व्यक्ति नहीं पशु के समान हैं। जो मनुष्य सेवा, त्याग और बलिदान का जीवन जीते हैं और किसी महान कार्य की पूर्ति के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं, उनकी मृत्यु सुमृत्यु कहलाती है।

4. मनुष्यता कविता के माध्यम से कवि ने मानवीय गुणों को अपनाने का संकेत दिया है। कवि के अनुसार मानव को प्रेम भाव से रहना चाहिए, एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए। कोई पराया नहीं है यह भाव मन में सदैव बनाए रखना चाहिए। सभी को एक दूसरे के काम आना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य को निर्बल मनुष्य की पीड़ा दूर करने का प्रयास करना चाहिए। सबसे अहम् गुण उदारता और परोपकार का होना चाहिए क्योंकि उदार व्यक्ति ही मन, वचन, कर्म से हमेशा मानवता की भलाई के बारे में ही सोचता है।
5. 'मनुष्यता' कविता में कवि ने महर्षि दधीचि, राजा रंतिदेव, राजा उशीनर तथा कर्ण जैसे महान व्यक्तियों के उदाहरण दिए हैं। कवि दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर त्याग और बलिदान का संदेश देता है कि किस प्रकार इन लोगों ने अपनी परवाह किए बिना लोक हित के लिए कार्य किए। दधीचि ने देवताओं की रक्षा के लिए अपनी हड्डियाँ दान दी, कर्ण ने अपना सोने का रक्षा कवच दान दे दिया, रंतिदेव ने अपना भोजन थाल ही दे डाला, उशीनर ने कबूतर के लिए अपना माँस दिया। हमारा शरीर नश्वर है इसलिए इससे मोह को त्याग कर दूसरों के हित-चिंतन में लगा देने में ही इसकी सार्थकता है। कवि ने यही संदेश दिया है।
6. प्रकृति के अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य में चेतना शक्ति की प्रबलता होती है। 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि परोपकार, त्याग और दानशीलता से परिपूर्ण जीवन जीने का संदेश देना चाहता है। मनुष्य दूसरों के हित का खयाल रख सकता है। इस कविता का प्रतिपाद्य यह है कि हमें मृत्यु से नहीं डरना चाहिए और परोपकार के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तैयार रहना चाहिए। जब हम दूसरों के लिए जीते हैं तभी लोग हमें मरने के बाद भी याद रखते हैं। हमें धन-दौलत का कभी घमंड नहीं करना चाहिए। सभी मनुष्य

ईश्वर की संतान है। अतः सभी को एक होकर चलना चाहिए और परस्पर भाईचारे का व्यवहार करना चाहिए।

7. कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है, क्योंकि एकता में बल होता है। मैत्री भाव से आपस में मिलकर रहने से सभी कार्य सफल होते हैं, ऊँच-नीच, वर्ग भेद नहीं रहता। सभी एक पिता परमेश्वर की संतान हैं। अतः सब एक हैं। इसलिए सभी को प्रेम भाव से रहना चाहिए, सहायता करनी चाहिए, एक होकर चलना चाहिए।

8. संसार के सभी प्राणियों के प्रति मन में बसी सच्ची सहानुभूति को महाविभूति कहा गया है। कवि के अनुसार यही महाविभूति व्यक्ति को समस्त विकारों से बचाकर जीवन-पथ पर आगे बढ़ने में सहायक होती है।

9. 'मनुष्यता' कविता द्वारा कवि त्याग, बलिदान, मानवीय एकता, सहानुभूति, सद्भाव, उदारता और करुणा की सीख देना चाहता है। कवि का कहना है कि हमें मानव जीवन यूँ ही नहीं प्राप्त हुआ है। हमें मनुष्य का जीवन मनुष्य की तरह ही जीना चाहिए और हमें पशु की प्रकृति से ऊपर उठकर हमें ऐसे कार्य करने चाहिए जो मनुष्यता के अनुकूल हों। हमें सदैव अपना जीवन परोपकार करते हुए व्यतीत करना चाहिए।

हमारा यह शरीर नश्वर है इसे एक ना एक दिन नष्ट हो जाना है। तो क्यों ना जितने समय के लिए हम संसार में आए हैं उस समय का सदुपयोग करते हुए ऐसे कार्य कर जाएँ जो इस संसार से जाने के बाद भी लोग याद रखें। मनुष्यता अपनी आत्मा को अजर-अमर बनाने की एक प्रक्रिया है और धरती ऐसे महापुरुषों को जन्म देकर धन्य हो जाती है जिन्होंने अपना जीवन मानव सेवा की कल्याण में लगा दिया। यदि हमने मनुष्य रूप में जन्म लिया है तो हमारे

अंदर दया, करुणा, परोपकार जैसे गुण अवश्य होने चाहिए तभी मनुष्य का जीवन सार्थक है। तब ही हमारे अंदर मनुष्यता है, नहीं तो हमारे अंदर पशुत्व है।

10. कवि ने इस कविता में मानवता, प्रेम, एकता, दया, करुणा, परोपकार, सहानुभूति, सद्भावना, उदारता त्याग, और निस्वार्थ जीवन जीने जैसे गुणों का उल्लेख किया है। कवि कहना चाहता है कि हमें ऐसा जीवन व्यतीत करना चाहिए जो दूसरों के काम आए। मनुष्य को अपने स्वार्थ का त्याग करके परहित के लिए जीना चाहिए। जो मनुष्य सेवा, त्याग और बलिदान का जीवन जीते हैं और किसी महान कार्य की पूर्ति के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं, उनकी मृत्यु सुमृत्यु कहलाती है।

कविता 5 : पर्वत परदेश में पावस

1. कवि ने इस पद का प्रयोग सजीव चित्रण करने के लिए किया है। 'सहस्र दृग-सुमन' का अर्थ है- हजारों पुष्प रूपी आँखें। कवि ने इसका प्रयोग पर्वत पर खिले फूलों के लिए किया है। वर्षाकाल में पर्वतीय भाग में हजारों की संख्या में पुष्प खिले रहते हैं। कवि ने इन पुष्पों में पर्वत की आँखों की कल्पना की है। ऐसा लगता है मानों पर्वत अपने सुंदर नेत्रों से प्रकृति की छटा को निहार रहा है।
2. पावस ऋतु में पर्वत प्रदेश में पल-पल रूप परिवर्तन वर्षाऋतु के कारण होता है। वर्षा ऋतु के समय क्षण में बादल घिर आते हैं, वर्षा होने लगती है, पुनः वातावरण स्वच्छ होकर धूप खिल जाती है।

3. 'पर्वत प्रदेश में पावस' के आधार पर 'है टूट पड़ा भू पर अंबर' पंक्ति का भाव वर्षा के मूसलाधार बरसने से है। वर्षा इतनी तेज और मूसलाधार है कि ऐसा लगता है मानो आकाश धरती पर टूट पड़ा हो। बादलों ने सारे पर्वत को ढक लिया है। पर्वत अब बिल्कुल दिखाई नहीं दे रहे। पृथ्वी और आकाश एक हो गए हैं अब बस झरने का शोर ही शेष रह गया है।
4. कवि ने अनुसार वर्षा इतनी तेज और मूसलाधार थी कि ऐसा लगता था मानो आकाश धरती पर टूट पड़ा हो। चारों ओर कोहरा छा जाता है, पर्वत, झरने आदि सब अदृश्य हो जाते हैं। ऐसा लगता है मानो तालाब में आग लग गई हो। चारों तरफ धुआँ-सा उठता प्रतीत होता है। वर्षा के ऐसे भयंकर रूप को देखकर उच्च-आकांक्षाओं से युक्त विशाल शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में धँस हुए प्रतीत होते हैं।
5. वर्षा इतनी तेज और मूसलाधार है कि ऐसा लगता है मानो आकाश धरती पर टूट पड़ा हो। बादलों ने सारे पर्वत को ढक लिया है। पर्वत अब बिल्कुल दिखाई नहीं दे रहे। पृथ्वी और आकाश एक हो गए हैं अब बस झरने का शोर ही शेष रह गया है। इसलिए कवि ने 'रव शेष रह गए निर्झर' कहा है।
6. पर्वतीय प्रदेश में वर्षा के समय में क्षण-क्षण होने वाले प्राकृतिक परिवर्तनों तथा अलौकिक दृश्य को देखकर ऐसा प्रतीत होता है, मानो वर्षा का देवता इंद्र बादल रूपी यान पर बैठकर जादू का खेल दिखा रहा हो। आकाश में उमड़ते-घुमड़ते बादलों को देखकर ऐसा लगता था जैसे बड़े-बड़े पहाड़ अपने पंखों को फड़फड़ाते हुए उड़ रहे हों। बादलों का उड़ना, चारों ओर धुआँ होना और मूसलधार वर्षा का होना ये सब जादू के खेल के समान दिखाई देते हैं।

7. कवि ने तालाब की तुलना दर्पण से की है क्योंकि तालाब का जल अत्यंत स्वच्छ व निर्मल है। वह प्रतिबिंब दिखाने में सक्षम है। दोनों ही पारदर्शी, दोनों में ही व्यक्ति अपना प्रतिबिंब देख सकता है। तालाब के जल में पर्वत और उस पर लगे हुए फूलों का प्रतिबिंब स्वच्छ दिखाई दे रहा था। काव्य सौंदर्य को बढ़ाने के लिए, अपने भावों की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए कवि ने ऐसा रूपक बाँधा है।
8. झरने की तुलना मोतियों की लड़ियों से की है। कवि पंत जी कहते हैं कि झरने की ध्वनि से उत्पन्न संगीत से ऐसा आभास हो रहा है कि मानो झरना पर्वत के गौरव का गान कर रहा हो। झरने के पानी से गिरने की तीव्र गति से उत्पन्न झाग और बूंदें ऐसी प्रतीत होती हैं कि मानो चारों तरफ मोती झर-झर कर बिखर रहें हों, ऐसा लगता ही कि माला की लड़ी से मोती टूट-टूटकर चारों तरफ गिर रहे हों।

कविता 6 : तोप

1. कंपनी बाग में तोप एक विरासत के रूप में रखी गई है।
2. विरासत में मिली चीज़ों की बड़ी सँभाल इसलिए होती है क्योंकि वे हमारे पूर्वजों व बीते समय की होती हैं। इनसे हमारा भावनात्मक संबंध होता है। इसलिए इन्हें अमूल्य माना जाता है। ये तात्कालिक परिस्थितियों की जानकारी के साथ दिशानिर्देश भी देती हैं। इसलिए इन्हें सँभाल कर रखा जाता है ताकि हमारे बच्चों के भविष्य-निर्माण का आधार मजबूत बन सके।
3. कंपनी बाग में रखी तोप यह शिक्षा देती है कि अत्याचारी शक्ति चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, पर उसका अंत अवश्य होता है। मानव विरोध के सामने उसे

हार माननी पड़ती है। किस प्रकार अंग्रेजों ने अत्याचार किए पर अंत में भारत को छोड़ना ही पड़ा। यह तोप हमें बताती है कि कोई कितना शक्तिशाली क्यों न हो, एक-न-एक दिन उसे धराशायी होना ही पड़ता है। तोप की तरह चुप होना ही पड़ता है।

4. चिड़ियाँ तोप को अपना विश्रामस्थल समझकर अक्सर उस पर बैठ जाती हैं और आपस में गपशप करती हुई प्रतीत होती हैं। कभी-कभी ये चिड़ियाँ शैतानी करते हुए तोप के भीतर तक चली जाती हैं।
5. तोप अपना परिचय उसकी शक्तिशालिता से देती है। तोप अपना परिचय देते हुए बताती है कि वह अतीत में इतनी शक्तिशाली थी कि उसने बड़े-बड़े सूरमाओं के धज्जे उड़ा दिए थे। वह इतनी शक्तिशाली थी कि कई वीरों को उसने अपने आगे नतमस्तक होने के लिए मजबूर कर दिया था।
6. तोप यहाँ पर 'अत्याचारी शासन' और चिड़ियाँ 'आजादी' का प्रतीक है। चिड़ियाँ यहाँ पर इस सत्य को उद्घाटित करती हैं कि कितना भी बड़ा अत्याचारी क्यों न हो पर एक-न-एक दिन उसका मुँह बंद होना ही है।
7. तोप अपना परिचय उसकी शक्तिशालिता से देती है। तोप अपना परिचय देते हुए बताती है कि वह अतीत में इतनी शक्तिशाली थी कि उसने बड़े-बड़े सूरमाओं के धज्जे उड़ा दिए थे। वह इतनी शक्तिशाली थी कि कई वीरों को उसने अपने आगे नतमस्तक होने के लिए मजबूर कर दिया था।
8. धरोहर हमारे पूर्वजों की निशानियाँ होने के कारण बड़ी महत्वपूर्ण होती है। तोप भी हमारी एक धरोहर ही है जो हमें अपने पूर्वजों की 'गुलामी' और 'आजादी'

की याद दिलाती है। तोप हमें याद दिलाती है कि हम जीवन में की गई गलतियों को दोबारा न दुहराएँ बल्कि अतीत से सबक लेकर भविष्य को उज्जवल बनाएँ।

9. कंपनी बाग में रखी तोप का प्रयोग अब नन्हें बच्चे उसकी घुड़सवारी का आनंद उठाने के लिए करते हैं। बच्चों से फारिग होने के बाद चिड़ियाँ उसे अपना आरामगाह समझकर आपस में गपशप करती है और शैतानी भी करती है। इन सब बातों से पता चलता है कि तोप अब निरर्थक हो गई है।
10. कंपनी बाग में रखी तोप को अतीत में अंग्रेजों के समय 1857 में उसका प्रयोग शक्तिशाली हथियार के रूप में किया गया था। अनगिनत शूरवीरों को मार गिराया गया था क्योंकि इसका प्रयोग अंग्रेजों द्वारा हुआ था। आखिरकार अब इस तोप को मुँह बन्द करना पड़ा। अब वर्तमान में इससे कोई नहीं डरता। अब यह केवल खिलौना मात्र है। चिड़िया इस पर अपना घोंसला बना रही है, उसमें बच्चे खेलते हैं। यह तोप हमें बताती है कि कोई कितना शक्तिशाली क्यों न हो, एक-न-एक दिन उसे धराशायी होना ही पड़ता है।

कविता 7 : कर चले हम फ़िदा

1. सर हिमालय का हमने न झुकने दिया इस पंक्ति में हिमालय भारत के मान सम्मान का प्रतीक है। भारत-चीन युद्ध हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों पर ही लड़ा गया था। भारतीय सैनिकों ने अपने प्राण गँवाकर देश के मान-सम्मान को सुरक्षित रखा। भारत के सैनिक हर पल देश की रक्षा हेतु बलिदान देने के लिए तत्पर रहते हैं। उनके साहस की अमर गाथा से हिमालय की पहाड़ियाँ आज भी गुंजायमान हैं।

2. हाँ, इस गीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। यह गीत सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। चीन ने तिब्बत की ओर से आक्रमण किया और भारतीय वीरों ने इस आक्रमण का मुकाबला वीरता से किया। इसी युद्ध की पृष्ठभूमि पर चेतन आनंद ने 'हकीकत' फिल्म बनाई थी। यह गीत इसी फिल्म के लिए लिखा गया था।
3. कवि ने “साथियों” शब्द का प्रयोग सैनिक साथियों व देशवासियों के लिए किया है। सैनिकों का मानना है कि इस देश की रक्षा हेतु हम बलिदान की राह पर बढ़ रहे हैं। हमारे बाद यह राह सूनी न हो जाए। सभी सैनिकों व देशवासियों को इससे सतर्क रहना होगा। देशवासियों का परस्पर साथ ही देश की अनेकता में एकता जैसी विशिष्टता को मज़बूत बनाता है।
4. ‘कर चले हम फ़िदा’ कविता में कवि ने देशवासियों से अपना सर्वस्व न्योछावर करने की अपेक्षाएँ रखी हैं। परन्तु हम कवि की अपेक्षा पर खरे नहीं उतरे हैं क्योंकि एक तो देश की सत्ता चलानेवाले सैनिकों को शत्रुओं का सामना करने की पूरी आज़ादी नहीं देते हैं और दूसरी ओर आम जनता भी देश हित से कोई सरोकार न रखते हुए अपनी स्वार्थपूर्ति में लगी रहती है।
5. इस गीत में सैनिकों और भारत की भूमि को प्रेमी-प्रेमिका के रूप में दर्शाया गया है। जिस प्रकार दूल्हे को दुल्हन सबसे प्रिय होती है, उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी वह बखूबी समझता है, ठीक उसी प्रकार इस धरती रूपी दुल्हन पर सैनिक रूपी प्रेमी कभी विपत्ति सहन नहीं कर सकते। सन् 1962 के युद्ध में भारतीय सैनिकों ने बलिदान के रक्त से धरती रूपी दुल्हन की माँग भरी थी। इसी समानता के कारण भारत की धरती को ‘दुल्हन’ कहा गया है।

6. 'कर चले हम फ़िदा' कविता में खून की रेखा खींचने का क्या तात्पर्य देश के सैनिकों के देश की रक्षा के पूर्णतया समर्पण से है। कवि सैनिकों से कहते हैं कि भारतभूमि सीता की तरह पवित्र है। अगर कोई शत्रु रूपी रावण उसकी तरफ़ बढ़ेगा तो अपने खून से लक्ष्मण (सैनिक) रेखा खींच कर उसे बचाएँगे। अतः देश की रक्षा का भार सैनिकों पर है।

'कर चले हम फ़िदा' कविता में 'रावण' शब्द का प्रयोग देश के उन दुश्मनों से हैं जिनके कारण देश की स्वतंत्रता खतरे में पड़ सकती है।

कवि यहाँ पर सैनिकों से आह्वान करते हुए कहते हैं कि हमारी भारतभूमि सीता माता की तरह पवित्र है और जिस प्रकार लक्ष्मण ने सीता की पवित्रता का ख्याल रखने के लिए लकीर खींची थी ठीक उसी प्रकार सैनिकों को अपने खून की लकीर अर्थात् बलिदान से देश की रक्षा के लिए हर समय तैयार रहना पड़ेगा

कविता 8 : आत्मत्राण

1. आत्मत्राण का अर्थ है आत्मा का त्राण अर्थात् आत्मा या मन के भय का निवारण, उससे मुक्ति। त्राण शब्द का प्रयोग इस कविता के संदर्भ में बचाव, आश्रय और भय निवारण के अर्थ में किया जा सकता है। कवि चाहता है कि जीवन में आने वाले दुखों को वह निर्भय होकर सहन करे। दुख न मिले ऐसी प्रार्थना वह नहीं करता बल्कि मिले हुए दुखों को सहने, उसे झेलने की शक्ति के लिए प्रार्थना करता है। कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उसका बल पौरुष न हिले, वह सदा बना रहे और कोई भी कष्ट वह धैर्य से सह ले इसलिए यह शीर्षक पूर्णतया सार्थक है।

2. इस पूरी कविता में कवि ने ईश्वर से साहस और आत्मबल माँगा है अंत में कवि अनुनय करता है कि चाहे सब लोग उसे धोखा दे, सब दुख उसे घेर ले पर ईश्वर के प्रति उसकी आस्था कम न हो, उसका विश्वास बना रहे। उसका ईश्वर के प्रति विश्वास कभी न डगमगाए। सुखों के आने पर भी ईश्वर को हर क्षण याद करता रहे।
3. कवि ईश्वर से विनती करता है कि हे करुणामय ईश्वर, मुझे ऐसी बुद्धि दें कि मैं सुख के दिनों में भी आपको न भूलूँ। कवि चाहता है कि जब उसके जीवन में सुख आए तो वह उनमें भी परमात्मा की कृपा माने। वह पल-पल सिर झुकाकर उसके दर्शन करता रहे।
4. कवि करुणामय ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है कि उसे जीवन की विपदाओं से दूर चाहे ना रखे पर इतनी शक्ति दे कि इन मुश्किलों पर विजय पा सके। दुखों में भी ईश्वर को न भूले, उसका विश्वास अटल रहे।
5. प्रस्तुत कविता में कवि की कामनाएँ हैं कि जीवन की विषम परिस्थितियों से ईश्वर उसे चाहे दूर ना रखे पर इतनी शक्ति दे कि इन मुश्किलों पर विजय पा सके। दुखों में भी ईश्वर को न भूले, ईश्वर पर उसका विश्वास अटल रहे।
6. 'आत्मत्राण' कविता द्वारा कवि मानव को यह संदेश देना चाहते हैं कि मानव को ईश्वर से अपने दुखों से छुटकारा माँगने के बजाय उन दुखों को सहन करने की शक्ति माँगनी चाहिए। मानव को विषम परिस्थितियों से न घबराकर ईश्वर से उस परिस्थितियों पर विजय पाने के लिए आत्मशक्ति की प्रार्थना करनी चाहिए कि विपरीत परिस्थितियों के समय सहायक के न मिलने पर उसका बल पौरुष न हिले, वह सदा बना रहे और कोई भी कष्ट वह धैर्य से सह ले। ईश्वर के प्रति

उसकी आस्था कम न हो, उसका विश्वास बना रहे। उसका ईश्वर के प्रति विश्वास कभी न डगमगाए। सुखों के आने पर भी ईश्वर को हर क्षण याद करता रहें।

7. कवि का कहना है कि हे ईश्वर मैं यह नहीं कहता कि मुझ पर कोई विपदा न आए, मेरे जीवन में कोई दुख न आए बल्कि मैं यह चाहता हूँ कि मैं मुसीबत तथा दुखों से घबराऊँ नहीं, बल्कि आत्म-विश्वास के साथ निर्भीक होकर हर परिस्थितियों का सामना करने का साहस मुझ में आ जाए।

[संचयन]

पाठ 1 : हरिहर काका

1. हरिहर काका आरंभ में एक सीधे-साधे सरल किसान थे। हरिहर काका निःसंतान थे और उनके हिस्से में पंद्रह बीघे उपजाऊ जमीन थी। अतः मंहत और भाई दोनों का उद्देश्य हरिहर काका की इसी उपजाऊ पंद्रह बीघे जमीन को अपने कब्जे में करना था। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए दोनों ने पहले तो काका को अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों में फँसाना शुरू किया जब उससे भी बात नहीं बनी तो उन पर ताकत का प्रयोग करना शुरू कर दिया। दोनों ही उनकी जमीन को हथियाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते थे। हरिहर काका यह जानते थे कि जब तक जमीन उनके पास है तब तक सभी उनका आदर करेंगे। उनके भाई लोग उनसे ज़बरदस्ती ज़मीन अपने नाम कराने के लिए डराते थे तो उन्हें गाँव में दिखावा करके ज़मीन हथियाने वालों की याद आती थी। काका ने उन्हें नारकीय जीवन जीते देखा था इसलिए उन्होंने ठान लिया था चाहे मंहत उकसाए चाहे भाई दिखावा करे वह ज़मीन किसी को भी नहीं देंगे। इस तरह अपने संबंधियों और गाँव वालों के स्वार्थी बर्ताव के कारण ही हरिहर काका सीधे-साधे सरल किसान से एक चतुर और समझदार व्यक्ति हो चले थे।

2. हरिहर काका निःसंतान थे और उनके हिस्से में पंद्रह बीघे उपजाऊ जमीन थी। मंहत और भाई दोनों का उद्देश्य हरिहर काका की इसी उपजाऊ पंद्रह बीघे जमीन को अपने कब्जे में करना था। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए दोनों ने पहले तो काका को अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों में फँसाना शुरू किया जब उससे भी बात नहीं बनी तो उन पर ताकत का प्रयोग करना शुरू कर दिया। दोनों ही उनकी जमीन को हथियाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते थे इसलिए हरिहर काका को मंहत और भाई एक ही श्रेणी के लगने लगे।
3. ठाकुरबाड़ी के प्रति गाँववालों के मन में जो अपार श्रद्धा के भाव थे उनसे गाँववालों की ठाकुरजी के प्रति अगाध विश्वास, भक्ति-भावना ईश्वर में आस्तिकता और एक प्रकार की अंधश्रद्धा जैसी मनोवृत्तियों का पता चलता है। क्योंकि गाँववाले अपनी हर छोटी-बड़ी सफलता का श्रेय ठाकुरबाड़ी को ही देते थे।
4. हरिहर काका अनपढ़ थे फिर भी उन्हें दुनियादारी की बेहद समझ थी। वे यह जानते थे कि जब तक जमीन उनके पास है तब तक सभी उनका आदर करेंगे। उनके भाई लोग उनसे ज़बरदस्ती ज़मीन अपने नाम कराने के लिए डराते थे तो उन्हें गाँव में दिखावा करके ज़मीन हथियाने वालों की याद आती थी। काका ने उन्हें नारकीय जीवन जीते देखा था इसलिए उन्होंने ठान लिया था चाहे मंहत उकसाए चाहे भाई दिखावा करे वह ज़मीन किसी को भी नहीं देंगे। इन बातों से स्पष्ट होता है कि काका अनपढ़ होते हुए भी दुनियादारी की बेहतर समझ रखते थे।
5. हरिहर काका को जब अपने भाईयों और मंहत की असलियत पता चली और उन्हें समझ में आ गया कि सब लोग उनकी ज़मीन जायदाद के पीछे पड़े हैं तो, उन्हें वे सभी लोग याद आ गए जिन्होंने परिवार वालों के मोह माया में

फँसकर अपनी ज़मीन परिवार वालों के नाम कर दी और मृत्यु तक तिल-तिल करके मरते रहे, दाने-दाने को मोहताज़ हो गए। इसलिए उन्होंने सोचा कि इस तरह रहने से तो एक बार मरना अच्छा है। अर्थात् काका को मृत्यु जीवन की अटल सच्चाई है यह पता चल चुका था इसलिए अब वे मंहत या अपने भाईयों के दिखावे या धमकाने पर भी अपनी जमीन किसी के भी नाम नहीं करना चाहते थे। अतः लेखक ने कहा कि अज्ञान की स्थिति में मनुष्य मृत्यु से डरता है परन्तु ज्ञान होने पर मृत्यु वरण को तैयार रहता है।

6. हरिहर काका की बात मिडिया तक पहुँच जाती तो, जो दुखी और एकाकी जीवन वे बिता रहे थे, वह उन्हें मिडिया के हस्तक्षेप से न बिताना पड़ता। वे अपने पर हुए अत्याचार लोगों को न केवल बताकर भयमुक्त हो जाते बल्कि उनके कारण कई और लोग भी जागृत हो जाते। साथ ही मिडिया वहाँ पहुँचकर सबकी पोल खोल देती, मंहत व भाईयों का पर्दाफाश हो जाता। अपहरण, धमकाने और जबरन अँगूठा लगवाने के अपराध में उन्हें जेल हो जाती। मिडिया उन्हें स्वतंत्र और भयमुक्त जीवन की उचित व्यवस्था भी करवा देती।
7. संयुक्त परिवार में रहने के लिए आपसी समझ, छोटे-बड़ों का आदर, प्रेम, निस्वार्थता आदि ऐसे अनेकों मूल्य हैं जिसके कारण संयुक्त परिवार में सुखपूर्वक रहा जा सकता है। घर के छोटे बड़े सभी सदस्यों के साथ समान व्यवहार से परिवार के सदस्य एक-दूसरे का साथ विपरीत परिस्थितियों में भी निभाते हैं। संयुक्त परिवारों में लोभ और लालच जैसे नकारात्मक मूल्य नहीं होने चाहिए। हरिहर काका के जीवन में भी जब उनके घरवालों के जीवन में इस लालच ने प्रवेश किया तब ही उनके बुरे दिन शुरू हुए। परिवार के सदस्यों को जब यह महसूस होने लगा कि काका की संपत्ति अब उनके हाथ से निकल जाएगी तो

सभी का व्यवहार उनकी तरफ से बदल गया और काका अकेले रहने पर मजबूर हो गए।

8. महंत द्वारा हरिहर काका का अपहरण महंत के चरित्र की अवसरवादी, लोलुपता, स्वार्थ सिद्ध करने के लिए जोर जबरदस्ती, यहाँ तक कि अपहरण जैसे कुसित सच्चाई को सामने लाता है। हरिहर काका को जबरन उठानेवाले महंत के आदमी थे। वे रात के समय हथियारों से लैस होकर आते हैं और हरिहर काका को ठाकुरबाड़ी उठा कर ले जाते हैं। वहाँ उनके साथ बड़ा ही दुर्व्यवहार किया जाता है। उन्हें समझाबुझाकर और न मानने पर डरा धमकाकर सादे कागजों पर अँगूठे का निशान ले लिए जाते हैं।

हरिहर काका की ऐसी स्थिति देखकर पवित्र संस्थाओं के प्रति जन-मानस का विश्वास खंडित हो जाता है। मानव अपने सांसारिक चिंताओं से मुक्ति पाने के लिए इन संस्थाओं का सहारा लेता है, परंतु वहाँ जाने पर अपने को ठगा-सा महसूस करता है। वह देखता है कि ये संस्थाएँ तो भ्रष्टाचार और अनैतिकता के अड्डे बने हुए हैं।

9. हरिहर काका की कहानी के आधार पर यदि रिश्तों को परखा जाय तो ये बात उचित लगती है। काका की पंद्रह बीघे जमीन के लिए घरवाले और ठाकुरबाड़ी के महंत भी पीछे पड़ जाते हैं। काका की संपत्ति पाने के लिए घरवाले और ठाकुरबारी के महंत भी उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं। सभी की नजर उनकी जमीन पर लगी रहती है। घरवाले और महंत अपने-अपने तरीकों से काका की जमीन अपने नाम करवाने का प्रयास करते हैं। उनके इस प्रयास में वे काका को डराने, धमकाने, जोर जबरदस्ती और हाथापाई पर भी उतर आते हैं।

पाठ 2 : सपनों के-से दिन

1. कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती- पाठ के इस अंश से यह सिद्ध होता है- इस पाठ में लेखक ने बचपन की घटना को बताया है कि उनके आधे से ज्यादा साथी कोई हरियाणा से, कोई राजस्थान से है। सब अलग-अलग भाषा बोलते हैं, उनके कुछ शब्द सुनकर तो हँसी ही आ जाती थी परन्तु खेलते समय सब की भाषा सब समझ लेते थे। उनके व्यवहार में इससे कोई अंतर न आता था। क्योंकि बच्चे जब मिलकर खेलते हैं तो उनका व्यवहार, उनकी भाषा अलग होते हुए भी एक ही लगती है। भाषा अलग होने से आपसी खेल कूद, मेल मिलाप में बाधा नहीं बनती।
2. लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल जाना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था परन्तु जब स्कूल में रंग बिरंगे झंडे लेकर, गले में रुमाल बाँधकर मास्टर प्रीतमचंद पढ़ाई के बजाए स्काउटिंग की परेड करवाते थे, तो लेखक को बहुत अच्छा लगता था। सब बच्चे ठक-ठक करते राइट टर्न, लेफ्ट टर्न या अबाऊट टर्न करते और मास्टर जी उन्हें शाबाश कहते तो लेखक को पूरे साल में मिले गुड्डों से भी ज्यादा अच्छा लगता था। इसी कारण लेखक को स्कूल जाना अच्छा लगने लगा।
3. बच्चों को पढ़ाई में रुचि इसलिए नहीं थी क्योंकि उनके माता-पिता को ही सर्वप्रथम पढ़ाई का महत्व नहीं पता था इसलिए बच्चा यदि स्कूल न जाना चाहे तो उसे स्कूल भेजने की जबरदस्ती भी नहीं करते थे। माँ-बाप को उनकी पढ़ाई व्यर्थ लगने का कारण उनका अपना व्यावसायिक पेशा था जिसमें उनके अनुसार ज्यादा पढ़ने-लिखने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

4. लेखक और उसके साथियों में से अधिकतर बच्चों को स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था। उन दिनों यदि बच्चों को स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था तो माँ-बाप भी उनके साथ जबरदस्ती नहीं करते थे। वे भी बच्चों को अपने साथ काम में लगा लेते थे। थोड़ा-सा बड़ा होने पर बच्चों को बहीखाते का हिसाब-किताब सिखा देना आवश्यक समझते थे। बचपन में बच्चों को सब कुछ अच्छा लगता है केवल उन्हें स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था।

नई कक्षा में जाना अच्छा लगता था परंतु साथ में डर भी लगता था कि मास्टर जी से पहले से अधिक मार पड़ेगी।

लेखक को स्कूल जाना इसलिए अच्छा लगने लगा क्योंकि उसे स्काउटिंग का अभ्यास करवाते समय नीली-पीली झण्डी हाथ में पकड़कर वन-टू-थ्री कहना बहुत मनोरंजक लगता था। मास्टर प्रीतमचंद जब उसे शाबाशी देते तो उसका मन खिल उठता था।

5. बच्चों की खेलकूद में अधिक रुचि से अभिभावकों को लगता है कि बच्चे अपने पढ़ाई का समय कम कर रहे हैं। उन्हें लगता है कि खेल के कारण परीक्षाओं पर उसका असर पड़ेगा और वे कम अंक अर्जित करेंगे। खेलकूद से कभी भयंकर चोटों भी लग जाती है।

अभिभावकों को अपनी खेलकूद के विषय में अपनी विचारधारा बदलने की आवश्यकता है। खेलकूद से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होता है। खेल छात्रों लिए दिनभर की मानसिक थकान को दूर करने के लिए जरूरी है। इससे उन्हें नींद अच्छी आती है और दूसरे दिन वे अपने आप को तरोताजा महसूस करता हैं। खेलों से छात्रों में मुझमें सहयोग, प्रतिस्पर्धा, अनुशासन, धैर्य और लगन आदि कई गुणों का विकास होता है। वर्तमान समय में खेल से भी छात्र अपना उज्ज्वल भविष्य और देश का नाम रोशन कर रहे हैं।

पाठ 3 : टोपी शुक्ला

1. इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला अलग-अलग मजहब के होते हुए भी एक दूसरे से प्रेमरूपी अटूट बंधन में बंधे हुए थे। टोपी की दोस्ती पहले-पहल इफ़्फ़न के साथ ही हुई थी। इफ़्फ़न के बिना टोपी शुक्ला की कहानी को समझा भी नहीं जा सकता है। अतः इस तरह इफ़्फ़न टोपी शुक्ला की कहानी का महत्वपूर्ण हिस्सा है।
2. अम्मी शब्द सुनते ही टोपी के घरवाले सकते की स्थिति में आ गए। उन्हें लगने लगा कि जैसे उनकी परम्परा और संस्कृति की दीवारें डोलने लगीं हो। उन्हें लगा उनका बेटा किसी बुरी संगति में फँस गया है। टोपी के सच बताए जाने पर घर में उसकी खूब पिटाई भी हुई।
3. टोपी और इफ़्फ़न दोनों मित्र थे। दोनों के दूसरे के बिना अधूरे थे। उनकी यह दोस्ती धर्म और जाति की दीवारों से परे थी। दोनों अलग मजहब के होने के बावजूद जो अपनापन टोपी को इफ़्फ़न के घर में मिलता वैसा स्नेह और लगाव तो उसे अपने घर में भी नसीब नहीं होता था। घर में उसकी पूरबी बोली को गँवारों वाली भाषा समझा जाता है परंतु इफ़्फ़न के घर दादी के साथ यही बोली सम्मानित की जाती थी। इफ़्फ़न कलेक्टर का बेटा होने के बावजूद कभी ये दोनों के दोस्ती की आड़ नहीं आई। वैसे भी मित्रता धर्म, मजहब से परे होती है और यह बात हम इफ़्फ़न और टोपी के दोस्ती से समझ सकते हैं।
4. टोपी को जो प्यार और अपनापन इफ़्फ़न की दादी से मिलता था वो उसे अपने घर में नहीं मिलता था। इफ़्फ़न की दादी की पूरबी मीठी बोली उसे अच्छी लगती थी जो उसके घर में उसकी माँ बोलती थी और घर में वर्जित थी। टोपी हिंदू धर्म का था और इफ़्फ़न की दादी मुस्लिम। परन्तु जब भी टोपी इफ़्फ़न के

घर जाता दादी के पास ही बैठता। दादी पहले अम्मा का हाल चाल पूछतीं। दादी उसे रोज़ कुछ न कुछ खाने को देती परन्तु टोपी खाता नहीं था। अतः दोनों का रिश्ता जाति और धर्म से परे प्यार के धागे से बँधा था। यहाँ पर लेखक ने यह समझाने का प्रयास किया है कि जब रिश्ते प्रेम से बँधे होते हैं तो तब धर्म मजहब सभी बेमानी हो जाते हैं।

5. इफ़्फ़न की दादी और टोपी की गहरी आत्मीयता, दादी का उसके प्रति प्रेम और उनसे मिलकर उसे होनेवाली खुशी के कारण टोपी इफ़्फ़न की हवेली की तरफ खिंचा चला जाता था।
6. इफ़्फ़न की दादी वैसे तो रोज़े और नमाज की पाबंद थी पर जब उनके बेटे अर्थात् इफ़्फ़न के पिता को चेचक निकली तो वे उसके पलंग के पास एक पैर पर खड़ी होकर माता से अपने बेटे को माफ करने की गुहार लगाने लगती है। इफ़्फ़न की दादी सुसराल में भी अपने मायके की ही पूरबी बोली ही बोलती थी। मौलवी के साथ उनका ब्याह होने के बावजूद इफ़्फ़न की छठी में उन्होंने खूब गाना-बजाना किया जो उनके घर में वर्जित वस्तु थी। इन बातों से सिद्ध हो जाता है कि इफ़्फ़न की दादी मिलीजुली संस्कृति में विश्वास रखती थी।
7. टोपी को जो प्यार और अपनापन इफ़्फ़न की दादी से मिलता था वो उसे अपने घर में नहीं मिलता था। इफ़्फ़न की दादी की पूरबी मीठी बोली उसे अच्छी लगती थी जो उसके घर में उसकी माँ बोलती थी और घर में वर्जित थी। टोपी हिंदू धर्म का था और इफ़्फ़न की दादी मुस्लिम। परन्तु जब भी टोपी इफ़्फ़न के घर जाता दादी के पास ही बैठता। दादी पहले अम्मा का हाल चाल पूछतीं। दादी उसे रोज़ कुछ न कुछ खाने को देती परन्तु टोपी खाता नहीं था। अतः दोनों का रिश्ता जाति और धर्म से परे प्यार के धागे से बँधा था यहाँ पर लेखक ने यह

समझाने का प्रयास किया है कि जब रिश्ते प्रेम से बँधे होते हैं तो तब धर्म मजहब सभी बेमानी हो जाते हैं।

8. एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को कई भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा जैसे वह अध्यापकों की हँसी का पात्र होता क्योंकि कमजोर लड़कों के रूप में अध्यापक उसका ही उदाहारण देते थे। फेल होने के कारण उसके कोई नए मित्र भी नहीं बन पाए। मास्टर उसकी किसी भी बात पर ध्यान ही नहीं देते थे। वह किसी से शर्म के मारे खुलकर बातें नहीं कर पाता था। बच्चे फ़ेल होने पर भावनात्मक रूप से आहत होते हैं और मानसिक रूप से परेशान रहने लगते हैं। वे शर्म महसूस करते हैं। इसके लिए विद्यार्थी के पुस्तकीय ज्ञान को ही न परखा जाए बल्कि उसके अनुभव व अन्य कार्य कुशलता को भी देखकर उसे प्रोत्साहन देने के लिए शिक्षा व्यवस्था में बदलाव किया जा सकता है। ऐसे बच्चों के लिए वैकल्पिक शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। शिक्षकों को इस तरह के बच्चों को समझने के लिए उचित मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए तथा परिवार वालों को उसकी भरपूर मदद करनी चाहिए न कि उसे कमजोर कहकर उसपर व्यंग कसने चाहिए।